7

बाल केंद्रित शिक्षा तथा प्रगतिशील शिक्षा

सुनैना मित्तल*

बच्चे के मनोविज्ञान को समझते हुए शिक्षण अधिगम की व्यवस्था करना तथा उसकी अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करना बाल केंद्रित शिक्षण कहलाता है। बाल केंद्रित शिक्षा के अंतर्गत बच्चे की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाती है। जब हम बच्चों को बाल केंद्रित शिक्षा प्रदान करते हैं, तो शिक्षण अधिगम रुचिकर हो जाता है। इसी विषय पर आधारित है प्रस्तुत लेख।

शिक्षा बच्चे की मूल प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं और संवेगों पर आधारित होनी चाहिए, ताकि उनकी शिक्षा को दिशा दी जा सके। बच्चों की शारीरिक व मानसिक योग्यताओं का अध्ययन करके फिर उनकी विकास में मदद करनी चाहिए। जैसे यदि कोई बच्चा मानसिक या शारीरिक रूप से कमज़ोर है या आपराधिक गतिविधियों से जुड़ा है तो पहले उसकी उस कमी को दूर किया जाना चाहिए। कुछ शिक्षक मनोवैज्ञानिक ज्ञान के अभाव में बच्चे मार-पीट कर ठीक करने की कोशिश करते हैं, परंतु इस तरह का व्यवहार स्थिति को और खराब कर देता है।

एन.सी.एफ़. 2005 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य बच्चों के स्कूली जीवन को उसके घर, आस-पड़ोस के जीवन से जोड़ना है। इसके लिए बच्चों को स्कूल में अपने बाल अनुभवों के बारे में बात करने का मौका देना चाहिए। उसे सुना जाना चाहिए, ताकि बच्चे को लगे कि शिक्षक उसकी बात को सुन रहा है। हर बच्चे में अपनी क्षमताएँ और कौशल होते हैं, जिन्हें स्कूल में व्यक्त करने का मौका देना चाहिए, जैसे — संगीत, कला, नाट्य, चित्रकला, नृत्य एवं प्रकृति के प्रति अनुराग इत्यादि।

प्राचीन काल में शिक्षा का जो स्वरूप था और वर्तमान में शिक्षा का जो स्वरूप हम देखते है, उन दोनों में बहुत अंतर है। जॉन ड्यूवी के अनुसार शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त करता है और अपनी संभावानाओं को पूर्ण करता है। खेल-खेल में बच्चों की रुचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करना और बच्चों की अधिगम क्षमता को बढ़ाना, उनकी अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करना बाल केंद्रित शिक्षण है। बाल केंद्रित शिक्षा में बच्चे

* *नर्सरी अध्यापिका*, आई.आई.टी., नर्सरी विद्यालय, नयी दिल्ली 110 016

के लिए विषयवस्तु सरल हो जाती है तथा शिक्षक बच्चों को प्रधान मनाते हैं, जिसकी वजह से शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है। बाल केंद्रित शिक्षा में बच्चों को व्यावहारिक और सामाजिक शिक्षा दी जाती है। शिक्षा मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। यह बच्चे के व्यवहार में ऐसे परिवर्तन लाती है, जो बालक के जीवन में उचित होते हैं। अगर हम प्राचीनकाल की शिक्षा प्रणाली की बात करें तो बच्चे के दिमाग में ज्ञान की सामग्री को ठूँस देना ही शिक्षा होती थी। लेकिन वर्तमान समय में बच्चे के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है। बच्चे के सर्वांगीण विकास में उसका शारीरिक विकास सामाजिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास आदि सभी पक्ष शामिल होते हैं।

आधुनिक शिक्षा पद्धति बाल केंद्रित है। आज यदि हम निजी विद्यालय की बात करें तो पाते है कि बच्चों के अनुसार शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है। अर्थात् जो अध्यापक बच्चों को उचित पद्धतियों का प्रयोग करके शिक्षण कराते हैं बच्चे उन्हें अध्यापकों को पसंद करते हैं। इस व्यवस्था में प्रत्येक बच्चे की ओर अलग से ध्यान दिया जाता है व्यावहारिक मनोविज्ञान में व्यक्तियों की परस्पर विभिन्नताओं पर प्रकाश डाला जाता है, जिससे यह संकेत मिला है कि शिक्षक हर एक विद्यार्थी की विशेषताओं पर ध्यान दें व उनके लिए प्रबंध करें।

आज के अध्यापक को केवल शिक्षा व शिक्षा पद्धति के बारे में ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के बारे में भी जानना होता है क्योंकि आधुनिक शिक्षा विषय प्रधान या अध्यापक प्रधान न होकर बाल प्रधान अथवा बाल केंद्रित है। यहाँ यह महत्व का विषय है कि बालक के व्यक्तित्व का कहाँ तक विकास हुआ है? इसलिए हमें शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होना अतिआवश्यक होता है। शिक्षा क्षेत्र शिक्षक को यह बताता है कि बच्चों को क्या पढ़ना है। परंतु समस्या यह है कि उन्हें पढ़ाना कैसे है? इस समस्या को सुलझाने में बाल मनोविज्ञान शिक्षक की सहायता करता है। बाल विज्ञान सीखने की प्रक्रिया, विधियों, महत्वपूर्ण कारकों, अच्छी या बुरी दशाओं आदि तत्वों से परिचित करवाता है। इसके ज्ञान से बच्चों को सीखने में सहायता प्राप्त होती है।

बाल केंद्रित शिक्षा में बच्चों के प्रयोग एवं अनुसंधान की ओर आकर्षित करने के लिए मनोविज्ञान का सहारा लिया जाता है। नई-नई परिस्थितियों में नई-नई समस्याओं को सुलझाने के लिए शिक्षक को अलग-अलग प्रयोग करने चाहिए। उससे निकलने वाले निष्कर्षों का उपयोग करना चाहिए। छात्रों को क्रियाशील रखने के लिए छात्र के हाथ, पैर और मस्तिष्क सब क्रियाशील होने चाहिए अर्थात् वह एक से अधिक ज्ञानेंद्रियों का प्रयोग बच्चे के अधिगम को और अधिक प्रभावी बना देता है। नैतिक कहानियों व नाटकों आदि के द्वारा बच्चे अच्छी तरह से सीखते हैं। महापुरुषों व वैज्ञानिकों के उदाहरण उनके लिए सदा प्रेरणादायी होते हैं। छात्र की रुचि उसे कार्य करने में प्रेरणा देती है। अत: शिक्षण बच्चे की रुचि के अनुसार दिया जाना चाहिए। अध्यापक को बच्चे की योग्यता अनुसार विषयवस्तु का चयन करना चाहिए। प्रत्येक बच्चे का बौद्धिक स्तर (Intelligence Quotient) अलग होता है। शिक्षक

को बच्चों की विभिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षक को सभी छात्रों को समान समझना चाहिए। सभी छात्रों से समान प्रश्न पूछने चाहिए और उनमें कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जो सभी के लिए आवश्यक है। शिक्षा वह है, जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उसके हृदय एवं आत्मा का विकास करती है। शिक्षा के उद्देश्यों को लेकर

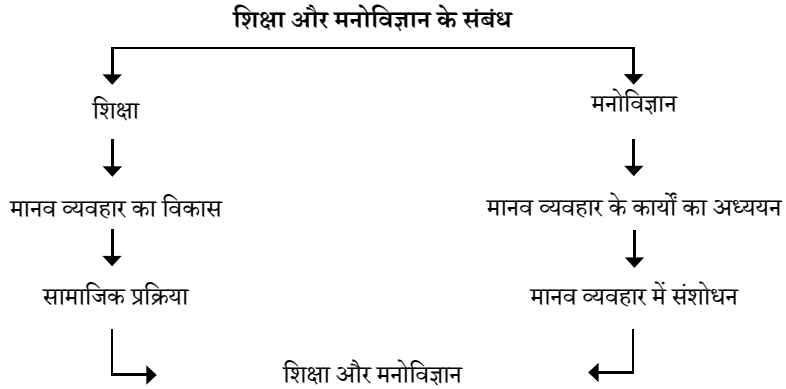

किसी भी क्षेत्र में अध्यापकों की सफल होने के लिए बात मनेविज्ञान का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। इसके अभाव में न तो बच्चों की विशेषताओं को ही समझा जा सकता है और न ही उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सकेगा। बच्चे के संबंध में शिक्षक को बच्चों के व्यवहार के मूल आधार आवश्यकताओं मानसिक स्तर, रुचियों योग्यताओं वह व्यक्तित्व इत्यादि का व्यापक ज्ञान अवश्य होना चाहिए। विद्यालय में किसी भी कक्षा का कार्यक्रम वैयक्तिक भिन्नताओं, प्रेरणाओं, मूल्यों व सीखने के सिद्धांतों के मनोविज्ञान के ज्ञान के आधार पर बनाया जाना चाहिए। शिक्षण के पश्चात् बच्चों का मूल्यांकन व परीक्षण भी अत्यंत आवश्यक होता है। मूल्यांकन से यह पता लगाया जा सकता है कि विद्यार्थी ने कितना अधिगम किया है।

कहा जाता है कि शिक्षा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए सबसे ज़रूरी हथियार है। किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा एक बुनियादी तत्व है। शिक्षा के माध्यम से बढ़ती जनसंख्या, गरीबी, सांप्रदायिकता, लिंगभेद जैसी समस्याओं से निपटा जा सकता है। शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग होता है 'प्राथमिक शिक्षा' क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ही आगे की शिक्षा के लिए एक मज़बूत आधार बन जाती है। सामान्य तौर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से लगाया जाता है जो बच्चे को रटने से दूर ले जाती हो तथा केवल जानकारी आधारित न हो, बल्कि अवधारणाओं की समझ पर हो। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रचलित शब्दावली के अनुसार अर्थ ऐसी शिक्षा है जो 'शिक्षक व पुस्तक केंद्रित' के स्थान पर 'बाल केंद्रित' शिक्षा हो तथा

बच्चे के ज्ञान, मूल्यों, कौशलों और क्षमताओं का विकास करती हो।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार के अनुच्छेद 45 के जरिये 1951 में यह वायदा किया था कि राज्य इस संविधान के लागू होने की तारीख से दस साल के भीतर 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रयास करेगा। लेकिन कानून के रूप में इसको अमलीजामा पहनाने में छह दशक से ज़्यादा समय लग गया। आखिरकार विभिन्न कमीशनों और समितियों की सिफ़ारिशों के बाद यह कानून 2004 में भारतीय संविधान के 86 वें संशोधन के तहत सामने आया और 1 अप्रैल 2010 को लागू किया गया। इसके बाद से शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाया गया और राज्यों को ज़िम्मेदारी दी गई कि प्रत्येक बच्चे को प्राथमिक शिक्षा देना सुनिश्चित किया जाए। मार्च 2013 तक देश के महज आठ फीसदी स्कूलों में यह कानून पूर्ण रूप से लागू किया जा सका है।

प्रगतिशील शिक्षा

प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा के अनुसार शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बच्चे की शक्तियों का विकास है। वैयक्तिक शिक्षा के अनुरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भी अंतर रखकर इस उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है। प्रगतिशील शिक्षा यह बताती है कि शिक्षा बच्चे के लिए है, बच्चे शिक्षा के लिए नहीं, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य ऐसा वातावरण तैयार करना होना चाहिए जिसमें प्रत्येक बच्चे के सामाजिक विकास को पर्याप्त अवसर मिले। प्रगतिशील शिक्षा का उद्देश्य जनतंत्रीय मूल्यों का विकास किया जाना है। शिक्षा के द्वारा हम ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें व्यक्ति-व्यक्ति में कोई भेद न हो, सभी पूर्ण स्वतंत्रता और सहयोग से काम करें। प्रत्येक मनुष्य को अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों, इच्छाओं और आकाक्षाओं के अनुसार विकसित होने के अवसर मिलें, सभी को समान अधिकार दिए जाएँ। ऐसा समाज तभी बन सकता है, जब व्यक्ति और समाज के हित में कोई मौलिक अंतर न माना जाए। शिक्षा के द्वारा मनुष्य में परस्पर सहयोग और सामंजस्य की भावना स्थापित करना होता है। प्रगतिशील शिक्षा में शिक्षण अधिगम विधि को अधिक व्यावहारिक करने पर ज़ोर दिया जाता है। इसमें बच्चे के स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया पर ज़ोर दिया जाता है। केवल शिक्षण से ही शिक्षक का कार्य पूरा नहीं होता, उसे बच्चों के ज्ञान और विकास का मूल्यांकन और परीक्षण करना होता है। मूल्यांकन करने से विद्यार्थी की उन्नति का पता चलता है और उसी अनुसार बच्चों में सुधार किए जाते हैं। भारतीय शिक्षा पद्धति में मूल्यांकन शब्द परीक्षा व तनाव से जुड़ा हुआ है। मूल्यांकन के तनाव से विद्यार्थी को दूर रखने के लिए बाल केंद्रित शिक्षा प्रणाली में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर ज़ोर दिया जाता है। मूल्यांकन एक बार के कार्यक्रम के बजाय एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे संपूर्ण अध्यापन अधिगम प्रक्रिया में निर्मित किया गया है। शिक्षा शास्त्र का शिक्षक के लिए विशेष महत्व होता हैं। क्योंकि एक अध्यापक को शिक्षा शास्त्र ही यह बतलाता है कि बच्चों को क्या पढ़ाया जाए?

वैसे सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि विद्यार्थियों को कैसे पढ़ाया जाए। बाल मनोविज्ञान

द्वारा ही अध्यापक को उपयोगी शिक्षण अधिगम विधि आ सकती है। उसे पता चलता है कि किस प्रकार के बच्चे को किस विधि से पढ़ाया जाए। बच्चों को भयमुक्त रखने और उन्हें मानसिक रूप से स्वरूप रखने की कवायद में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षक के आचरण में सख्ती की जगह मैत्रीपूर्ण व्यवहार, कड़े अनुशासन की जगह लचीली व्यवस्था, पिटाई की जगह अपनत्व बच्चों को चिंता से उन्मुक्त रखने से परिणाम यह होगा कि समाज में शिक्षक की आज की भूमिका भी बदल जाएगी। भविष्य में समुदाय और समाज शिक्षक को बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा और निगरानी का महत्वपूर्ण हिस्सा मानने लगेगा। यह हर शिक्षक के लिए गौरव की बात होगी। बच्चों को सजा न देने और उन्हें भयभीत न करने को लेकर शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों में वर्तमान में जो संशय हैं, वह भी धीरे-धीरे दूर होता चला जाएगा। दुनिया तेज़ी से बदल रही है। शिक्षक को भी आ रहे इस बदलाव के चलते अपनी शिक्षण पद्धति में आवश्यकानुसार सुधार करने होंगे।

प्रगतिशील शिक्षा के योगदान में मस्तिष्क एवं बुद्धि की अहम भूमिका है। इनके माध्यम से वह दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने का काम करता है। जैसे-जैसे वह अपने दैनिक जीवन में अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करता है वैसे-वैसे वह मानसिक विकास भी करता है। मस्तिष्क ही वह मुख्य उपकरण है जो समस्याओं को सुलझाने में सहायक होता है। अत: बालक के संबंध में शिक्षक को उसके व्यवहार के मूल आधारों आवश्यकताओं, मानसिक स्तर, रुचियों, योग्यताओं, व्यक्तित्व इत्यादि का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा, बच्चे की मूल प्रवृतियों प्रेरणाओं और संवेगों पर आधारित होनी चाहिए। प्रगतिशील शिक्षा में शिक्षक को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसके अनुसार शिक्षक समाज का सेवक है, उसे विद्यालय में ऐसा वातावरण बनाना पड़ता है जिसमें पलकर बच्चे के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। विद्यालय में स्वतंत्रता और समानता के मूल्य को बनाए रखने के लिए शिक्षक को कभी भी बच्चों से बड़ा नहीं समझना चाहिए। आज्ञा और उपदेशों के द्वारा अपने विचारों और प्रवृत्तियों को बच्चों पर लादने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है उसके कई पक्षों में सुधार की आवश्यकता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था पर एक वृहत जनसमूह को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व है। साधन और संसाधन बहुत सीमित हैं। परिस्थितियाँ भी अनुकूल नहीं हैं, फिर भी हम लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर प्रयत्नशील हैं। फिर भी हम दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े तो इस निराशाजनक स्थिति से उभर सकते हैं।

सबके लिए शिक्षा की सुविधा करवानी है कि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वह इस लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग प्रदान करें। *ईच वन टीच वन* (Each one, Teach one) का नारा इस दिशा में सफलता दिला सकता है। शिक्षा में तकनीकी का उपयोग अत्यधिक हो रहा है, किंतु इन तकनीकों साधनों को शिक्षक का विकल्प न मानकर सहयोगी मानकर प्रयोग करने का लक्ष्य हैं।

संदर्भ

वर्मा, रिंकू कुमार. 2013.'बाल केंद्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा'. *बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र*. अरिहंत पब्लिकेशन लिमिटेड. नयी दिल्ली.

सरोहा, सुशील. 2012. 'चाइल्ड सैटर्ड एंड प्रोग्रेसिव एजुकेशन'.*एजुकेशनल साइकोलॉजी*. सरोहा पब्लिकेशन, रोहिणी, नयी दिल्ली.

———. 2016. 'बाल केंद्रित शिक्षा एवं प्रगतिशील शिक्षा'. *बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र*. सरोहा पब्लिकेशन, रोहिणी, नयी दिल्ली.